

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः॥ पुनश्च यत्र मात्मानं बालधीरद्विसिद्धयः। सावस्वती नृशृङ्ग
 प्रक्षिपान्नातिविरुद्धम्॥ इन्द्रादयानि यस्यान् नययूः नवविधः। प्रक्षिप
 कस्य कृत्स्नस्य कर्मो वक्तुं नवः कथं॥ तदुतावर्त्सं क्षमं यव कृत्स्नस्य संप्र
 श्रुत्वा उच्यते॥ समानाः॥ अनेन नययूः कृत्स्नस्य यव कृत्स्नस्य संप्र
 नर्त्तनं क्षमं विधीयते। नैतच्छ्रुत्वा उच्यते सवित्रं नवः संध्यां विवर्द्धितत्वा द्विवर्द्धितम्
 सन्धिर्विवर्द्धितं नित्यम्॥ लौकिकयथा गतिश्च कृत्यं समयमाप्रत्वा च॥ ॥

4514 ARCHIVE

2269

工

सुनसुपुनमः
 ३
 सागराणि॥

जातासावत्तनाः। प्रत्याहारंति ग्रहयिष्या वीरुना न्यूनकामति हयवत्रलं श्र
 दानदम। मरुधघरु उउदगव खरु ०४ चणकय गषस॥ ॥ आशनाय
 प्रत्याहारंति ग्रहयिष्या मतावधुमि काः। आदिव (धूमन सह गृधमा
 रुनामा प्रत्याहारः॥ ॥ तथाहि॥ अकावा वकावदी सह गृधमा (म। क प्रत्याहा
 रः। सच अरु उम ० प्रवेडो हयवत्रल अणनदम मरुधघरु उउदगव॥ ॥
 हयवत्सी स्वाकः संप्रदात॥ चणकय इति च य प्रत्याहारः। उउदगव इति उव

प्रत्याहारः। मरुधघरु इति अरु प्रत्याहारः। प्रवेडय उउदय नयन प्रत्याहारः। दार्थ्य समगु
 त उउदयः सख्या नियम मुनासि॥ ॥ हसाय अनानि॥ रुका वादयः सकावाता वधुहिसाव
 अना निरुवति॥ स्वगदी नय अरु न। तयकावः। सूख मुखे द्वावार्थत्वा दिं ती इकः॥
 कायार्थः॥ यलयाद्यतिविकः कसे चित्ता यथाया यमा (म। वधुः ॥ ती इरुवति॥ यल्यती
 इतस्य लापः। वधुदिली लापः। वधुविना। धालायन॥ मिथवदायनः। नयुवदायनः॥
 हयन नविता हसाः संधा गः॥ ॥ वधुदुयुवनीः। उकावः य अरु वधु ये विग्रहार्थः॥

२सनखकीनामः॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

五

मधुञ्जि॥मधुवि२

[illegible]

4

रुवति॥ यटाडातु॥ यटावातु॥ ॥ गवाधववर्धगमाकादोवकाव॥ गमअक॥ गवा
क॥ गमअक॥ गवन्द॥ गमअतिनी॥ गवातिनी॥ स्वःविनी॥ स्वविनी॥ अकडुहिनी॥ अक
हिनी॥ यटुर॥ योट॥ ॥ कवित्वववयकाव॥ यथययविमा॥ गमयुति॥ गवुति॥
अन्यगर्वा॥ मिथीराव॥ गमयुति॥ जेअय॥ जेकाव॥ अयूरवगिस्वययव॥ नेअक॥ ना
यक॥ ॥ डेअव॥ डेकाव॥ अवरवगिस्वययव॥ नेअक॥ नाविह॥ ॥ धाअधिगव
यदक॥ यदक॥ कितानामेयादीना॥ यकाववकावथा॥ धिधिरुवति॥ नअगता॥ नअ

सप्तमि ५ अथमवधो नमः

दग्नेन ययसु दग्नेन ययसु रुवति ॥ तद्गुहविः। तद्गुहविः। तद्गुहविः। वाक्कहविः। वृण्य
 विः। वाक्कहविः॥ ॥ स्मः। ययसु। ययसु॥ स्मः। सकावस्य तव गेस्य। सकावस्य तव गेस्य
 या। गणकावचव। गेस्यथ। सख्यनरुवति॥ कसूचवति। कसूचवति॥ कसूचवति॥ कसूचवति॥
 कसूचवति॥ कसूचवति॥ कसूचवति॥ तद्गुहविः। तद्गुहविः॥ तद्गुहविः। तद्गुहविः॥ ॥
 नमः॥ सकावस्य तव गेस्य। सकावस्य तव गेस्य। सकावस्य तव गेस्य। सकावस्य तव गेस्य॥
 ॥ स्मः। ययसु॥ स्मः। सकावस्य तव गेस्य। सकावस्य तव गेस्य। सकावस्य तव गेस्य। सकावस्य तव गेस्य॥

३ य व ल य व ल ॥ म न स्ता न स्य य व ल य न य व ल ॥ का र व लि ॥ स वि त्त न ४ स व त्त न ४ स य का ॥ स य का ॥ रि लो क ॥ त लो क ॥
 ४१ क ष ४१ क सू टी क र ॥ क षी क र ॥ त त टी क र ॥ त टी क र ॥ ॥ तां लि ले ॥ त व र्ग
 स्य ल का न य व ल का न रु व ति ॥ त त लु ना ति ॥ त लु ना ति ॥ रु वा नु लि ख ति ॥ रु वा लि ख ति ॥
 अ न क्ता दि य र द य रु व जि ता य व लो ॥ सा नू ना सि का नि य नू ना सि का य ॥ त य सा नू ना
 सि क य व ल का न न का व स्य रु व कि ॥ ॥ ने वि ॥ ष का व य व त व र्ग स्य दृ र्त्त न रु व ति ॥
 रु वा नू य ४१ रु वा नू य ४१ ॥ तां न स्ता ॥ य दान क व र्त्त मा ना दृ व र्त्त त्य न स्य का ४१
 न रु व ति ॥ य नू न व १ ॥ ष नू न व १ ॥ ष नू सी द लि ॥ ष नू सी द लि ॥ ॥ न ४ स क र ॥ ना क स्य

रुवाभूः न०॥ ३ गंगा चोत्पत्तिः प्रवृत्तिः स्वर्गात् नीदं द्रुतं नृसिंहा वलोकनं वै वृत्तिः
 टिड्ढि गवायन्तयावृत्तिः । वाजन्तिर्ष । वाडं चिर्ष ।
 (वाचकः) ॥ नान्तरा यदुस्य । यत्नेन वाचनं गमात्
 रुवाभूः न०॥ ॥ इन्द्रादिभ्यः ॥ इका न चका न

[illegible]

केचिन्नुयरस्यरानयेक्षायांपदांतादयिनित्येननिष्ठतुकुमारीरुचं

कविदीर्घदयिककथ्यो॥ जीकुशजीकुशसुकुशसुकुश॥ ॥मानूखात्र॥ मकाय
स्यानूखावा रुवति हसयन्॥ तुम्हसंगि। तं हसति। यद्मृष्टथा। यद्मृष्टथा॥ ॥न
पद्यदाकजस। नकायस्य मकायस्य चायदान्कवरुमानस्यानूखावारुवति। अस्य
न॥ यन्नानसि। यन्नीसि। पयान्सि। पर्यांसि। कन्ससकंस॥ समसस॥ संसस॥
यमायथस्य॥ अनूखात्रस्य यमारुवति यथयन्। अस्त्वययस्य सवक्षः॥ तं कधाति।
तं ऊनाति। तं तनाति। तं ननाति। सं जानासि। स ज्ञानासि। तं टीकया। तच्छीकया। संय

यवनस्य एतन्मूलं नि यमाः २

ॐ नमो भगवते
वसुदेवाय

70

सा रसि ह

[illegible]

ਸਭ ੨

ਸੁਨਹਿ ॥ ਕੁੰਭ

शुक्रावात्यनस्य विसर्जनीयस्य उकाधारुवति मियवगः॥ क१ अर्थः॥ का१ र्थः॥ ॥
 हव॥ शुक्रावात्यनस्य विसर्जनीयस्य उकाधारुवति हवयव॥ क१ गतः॥ का१ गतः॥ दव
 याति॥ दवा॥ याति॥ मनः॥ वथः॥ मना॥ वथः॥ ॥ अर्थः॥ लायः॥ अर्थः॥ लायः॥ वस्य विस
 र्जनीयस्य लायः॥ रुवत्य वयव॥ दवा॥ अर्थः॥ दवा॥ अर्थः॥ वाता॥ वाता॥ वाता॥ वाता॥
 ॥ ॥ हवयव वंवा॥ अर्थः॥ लायः॥ वस्य विस र्जनीयस्य हवयव वाय त्वैरुवति॥ दवा॥
 अर्थः॥ दवा॥ अर्थः॥ दवा॥ अर्थः॥ ॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥
 ॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥ अर्थः॥

[illegible]

कविनामिनावल्लापः॥ कविनामिनः यनस्य चिरंजीयस्य लाला रवति नूवेयने ॥ हनि हनुः ॥ हनि हनुः॥

सु
वि

दीर्घा॥ प्ररुस्यनरुपव... श्रवति॥ पूर्वस्यावदीर्घः॥ पूनः वमत॥ पूनावमत॥
 पुकिः नूयात्मनाश्रुति॥ पुकी नूयात्मनाश्रुति॥ ॥ सेवाद्वस ॥ सगदादवग
 कात्यनस्यविमरुनीयस्यलायाश्रवतिरुसंयय॥ सः चवति॥ सननति॥ एषः ह
 सति॥ एषरुसति॥ ॥ सेवाद्विनि सं हिता॥ सेवाद्विनि सं हिता॥ सेवाद्विनि सं हिता॥
 विनः॥ सेवाद्विनि सं हिता॥ सेवाद्विनि सं हिता॥ सेवाद्विनि सं हिता॥
 यैर्लोकिककार्यैरु नददवकलैरुवत्॥ संमार्गमार्गददसंवि मित्यादीनाम

१२

प
र
द
व
र

इष्टता॥ कविन्युवतिः कविदयवतिः कविदितावा कविदनादव। विधिवि
 धनैवद्रुधसमीक वायुविधं वाकलुर्कवदकि॥ वद्विगमावर्तवियर्थयय्य
 वायवोवर्तविकारनालो। धाताकदधति गयनयागः सुउच्यत यश्चविधं निवृक्तं॥
 वद्विगमावर्तविकारनालो। धाताकदधति गयनयागः सुउच्यत यश्चविधं निवृक्तं॥
 धादव॥ वद्विगमावर्तविकारनालो। धाताकदधति गयनयागः सुउच्यत यश्चविधं निवृक्तं॥
 मनादिषू॥ ॥ कृतिविमर्गशुक्तिः॥ ॥ यश्चसुविः संमार्गः॥ ॥ अथविर

हितिहिसायां हिं॥

किंवितायत॥ सादिध॥ स्यादिस्यादिभ्य॥ विरुक्कनंयदी॥ तयस्यादि विरुकि न्रीमा
 यास्यते॥ ॥ अविरुकिनाम॥ विरुकिवदितं धातुवर्जितं चार्थवद्भूय नानायात॥
 कुरुद्वितसमासायुयातिथदिकसंज्ञाः तिकवित्॥ तस्मात्॥ सिडोडसु॥ अमुडोडसु
 टार्यारिसु॥ कर्थात्यसु॥ कसि॥ र्या॥ त्यसु॥ कसु॥ डोसु॥ अमु॥ दि॥ डोसु॥ सुयु॥ ॥ तस्मा
 नामः यनाः स्यादयः सकविरुक्कया रुवन्ति॥ तयायर्थमापेक्षितविवक्षायां यथमेक
 वचनदवसिः इति स्थितं॥ इकावडवान्वार्थः॥ ॥ अविस्मर्तः॥ सकावडयथावि

सर्जनीयादामरुवत्यभागावसयदाकन॥ दवश॥ द्वित्वविवक्षायां॥ डोडोडो॥ दवो॥
 वद्वत्त्वविवक्षायां वद्वत्त्वचनं दवजसु इति स्थितं॥ इकावस्य तस्य स्यात् लायश॥ दयाजनं
 जमीति वि॥ गमदी॥ दवजसु इति स्थितं॥ दीर्घविसर्जोदवाश॥ अकावाकस्य सा॥ सुकृ
 विदकृयः॥ दवासः॥ वाक्कमसः॥ द्वितीयैकवचनं दवजसु इति स्थितं॥ ॥ अमुमासा
 वस्य॥ समाना इत्यनयो वमामावकावस्य लायावत्यभागाश॥ दवी॥ दवो॥ वद्वत्त्वच
 नं दवजसु इति स्थितं॥ इकावस्य जमीति वि॥ गमदी॥ ॥ सानः॥ दू॥ म॥ यी॥ ति॥ गा॥ तु

सामान्ये नमः ॥
 सामान्ये ॥ ७ ॥

समाना इह न स्यात् ॥ समानस्य न का नो भवति ॥ ० ॥ गति ॥ गति पत्र पूर्व स्य दीर्घ
 रुवति ॥ यदा द ग ल ह ह वति ॥ दवान् ॥ नृती ये क व च न द व द ण ॥ ति स्ति ॥ ठ का वा नू व
 न्ध ह न ति द्वि ग य म थ ॥ ॥ ठ न ॥ अ का वा ल्य न स्या ण् न रुवति ॥ अ ण् ॥ द व न ॥ ॥
 अ हि ॥ अ का नू अ रुवति रु का न य न ॥ द वा र्था ॥ ॥ अ ॥ अ का वा ल्य न स्या रि मा रु का न
 स्या का न द ण् रुवति ॥ अ ण् ॥ द व ण् ॥ ति स्ति ॥ वृ डि वि स रू नी यो द वे ॥ ॥
 अ का न स्य रि सि रु न्द स्य का वा व क य ॥ द व रि ॥ क (रू रि ॥ ॥ व उ ण् व च न द व ण्
 स्य ३

७४

क १

ति स्ति ॥ ठ का वा ण् रु का र्थ ॥ सर्व ॥ ॥ ठ अ क ॥ अ का वा ल्य न स्य ण् ॥ ति स्ति
 अ ग ग म रुवति ॥ कित्वा द क ॥ ॥ अ अ य ॥ दी र्घ ॥ द वा य ॥ द वा र्था ॥ ॥ अ रि व रु व
 अ का न स्य रु व ति स का न रु का न व रु व ति ॥ द व र्था ॥ य च स्य क व च न द व द ति
 ति ॥ ॥ ठ सि व रु ॥ अ का वा ल्य वा रु सि न रुवति ॥ द वा ॥ द र्वा र्था ॥ द व र्था ॥ ॥ व रु
 क व च न द व द रु ॥ ति स्ति ॥ ठ स्य ॥ अ का वा ल्य वा रु स्या रुवति ॥ द व स्य ॥ ॥ अ सि
 अ का न स्य अ सि य न प र्त्वं रुवति ॥ अ अ य ॥ द व र्था ॥ ॥ न ज म ॥ समाना इह न स्यात्

संस्कृतम्

यथ। हसख ॥ ॥ उमख ॥ सखिदस्येकात्राद। मरुवति र्थं यमय वयू वधीनिर्दिष्टस्याद
सकटकस्यरूपय ॥ ॥ अयादस ॥ सखायो ॥ द्विवचनस्यावाक्येनसि ॥ सखाया ॥ सखाय ॥
सखार्य ॥ सखायो ॥ सखीन ॥ ॥ सखियथावीक ॥ सखियतिशयथावीकगभा रवति ॥ दा
ददिसूयनत ॥ दीदन्ता नानरुवति ॥ ॥ सखा ॥ यथा ॥ अगमऊमैनिर्ग्य ॥ सखिना ॥
यतिना ॥ सखिह्याम् ॥ सखिरि ॥ सखा ॥ सखिह्याम् ॥ सखिख ॥ ॥ सखा ॥ सखियतिशयथा
मगमभा रवतिदसिदसादकाय यन ॥ यत्वं सख्यु अमूकं ति कित ॥ ॥ अगादड ॥ अकावा
कात्यनस्यदसिदसादकाय सखकात्राद। मरुवति सखडित ॥ सखू ॥ सखिही ॥ सखि

सख ॥ सखू ॥ सखा ॥ सखीनी ॥ ॥ सफमेकवचनदमेतिशोकात्रकृत ॥ सखियथावीकं ति अ
गभा रवति ॥ सखा ॥ सखा ॥ सखिख ॥ ॥ यतिशययथमाद्वितीयथाद्विगदवत्युक्रिया ॥ म ती
यादो सखिवदकय ॥ यतिनसमाप्त एव सखिवदकय ॥ गत ॥ समासाकस्यानादया रवति ॥ यजा
यतिना ॥ यजायतय ॥ यजायते ॥ यजायते ॥ ॥ अयादि ॥ द्विषाथानिर्ग्य द्विवचनाक ॥ द्विउं ति
कित ॥ यदादक्षत्र ॥ यदादक्षत्रकात्रा रवति स्यादोयत्र ॥ दो २ ॥ दया ॥ ३ ॥ दया
॥ २ ॥ द्विषाथानिर्ग्य वदवचनाक ॥ यिजसू ति कित ॥ उडाजसीयकात्र कृतं अयादस ॥
गुय ॥ गीन ॥ गिरि ॥ गिरि ॥ २ ॥ पुत्रयदू ॥ द्विषाथअ यदाद। मरुवति ॥ नामि यत्र ॥ दि

[illegible]

20

नामि तदकस्यामकस्य वयकाववकावो रुवतशस्य वयन ॥ वषास्य पूनरुयति विकरुहाद
सूधीनयो वरुयित्वा वागदक्षदिर्यं विवक्षा ॥ सनान्यो । सनान्यश । रुसनानी । रुसनान्यो । रुसनान्यश ।
सनान्यी । सनान्यो । सनान्यश । सनान्या । सनानीर्याम् । सनानीरि । सनान्य । सनानीर्याम् । सनानीर्य
श । सनान्यश । सनान्याश । सनान्यादीती वामानूयक्यश । सनान्यी । सनानीती ॥ ॥ अमृ निरियधु ॥ अ
वकानीश । द्याञ्चाकवस्य द्वा माद । रुवति ॥ सनान्यी । सनान्योश । सनानीयू ॥ ॥ उर्वप्रममी । अ
गुणीयुक्तयश ॥ ॥ उकावाकध्रयवन्तूदययुक्तयश ॥ यवन्तूश । यवन्तो । यवन्तूश । रुयवन्तू
श । यवन्ती । यवन्तो । यवन्तूश । यवन्तू ॥ ॥ अद्यादि ॥ ॥ अकावाकशयुत्ती गधियुक्तयश ॥ सना ॥

सा नखनि ॥

[illegible]

नृत्तानामिष्यार्थः ॥ नृत्तम् । नृत्तम् ॥ ॥ कर्तुं शक्यं यथा शस्त्रं सूत्रं विना ॥ मुनान् ॥ सकान्
 नृत्तं यथा सर्वं धिनम् कान्स्यात् नृत्तम् ॥ यथा शस्त्रं यथा शस्त्रम् ॥ कर्तुं न सिद्धिः ॥ यथा
 धनं नृत्तम् ॥ ॥ सन्नादिनादिनाम् ॥ कर्तुं । कर्तुं । कर्तुं । कर्तुं । कर्तुं । कर्तुं ।
 कर्तुं । कर्तुं ॥ ॥ स्यादि ॥ ॥ यथा पूर्ववत् ॥ ॥ यथा नृत्तं यथा नृत्तम् ॥ यथा नृत्तं
 यथा ॥ ॥ यथा नृत्तं यथा नृत्तम् ॥ यथा नृत्तं यथा नृत्तम् ॥ यथा नृत्तं यथा नृत्तम् ॥
 यथा नृत्तं यथा नृत्तम् ॥ ॥ यथा नृत्तं यथा नृत्तम् ॥ ॥ यथा नृत्तं यथा नृत्तम् ॥ ॥

२ गंगं जगन्दी लक्ष्मीः श्रीः मुनिवर्मा गिरिस्थानतः पुनर्विधर्मोत्पन्नो यो

मानस नि॥

[illegible]

२३५

सा नन्दग

नृणां यजगमा रुवति ॥ टकाया दानियमार्थः ॥ नृने ॥ गंगथे ॥ गंगथी ॥ गंगथः ॥ गंग
या ॥ गंगथी ॥ गंगथः ॥ गंगया ॥ गंगथा ॥ गंगनी ॥ ॥ अम् ॥ गंगथी ॥ गंगथा ॥ गंगसू ॥
नृवृद्धाभक्षसालामालाहलायालायुतयः ॥ ॥ सर्वदीनानुदितसुविद्ययः ॥ ॥ अम्
तः ॥ क्रियाम् ॥ अकावाकानाम् ॥ क्रियीवर्कमानादाय्यथारुवति ॥ ॥ सर्वः ॥ सर्वः ॥ सर्वः ॥
रुसर्वः ॥ रुसर्वः ॥ रुसर्वः ॥ ॥ सर्वः ॥ सर्वः ॥ सर्वः ॥ ॥ सर्वया ॥ सर्वथी ॥ सर्वरिः ॥ ॥ यथा ॥ अम्
वलात्सर्वः ॥ यवस्ययटः ॥ सुदागमारुवति ॥ पूर्वस्यवायाकाथारुवति ॥ सर्वस्य ॥ सर्व
थी ॥ सर्वस्य ॥ ॥ सर्वस्य ॥ ॥ सर्वथी ॥ ॥ सर्वस्य ॥ ॥ सर्वया ॥ ॥ सर्वसी ॥ ॥ सर्वस्यी ॥

३५ श्रीतलीतनीलक्षीप्रदीपमूलादिके। सक्रानामवध्यातीसिलापातकदाचन॥३

आषाढीतुल्य ३

साम्प्रदायिना

[illegible]

१२ वसिष्ठा
धर्मशास्त्रेण ॥

दा२

१०५॥ लिख्य २ दिनामद ॥ श्रीरामा, श्री

दशमोऽध्यायः ।

श्री यामुश

प्रियः। प्रीत्या। प्रीत्या॥ प्रियाः। प्रियाः। प्रियाः। प्रियाः॥ प्रीतिः॥ प्रीतिः॥ प्रीतिः॥
 जगमा राव आभाय राव॥ प्रियाः। प्रियाः। प्रियाः॥ प्रीतिः॥ प्रीतिः॥ प्रीतिः॥ प्रीतिः॥
 वधूः। वधूः। वधूः। वधूः। वधूः। वधूः। वधूः। वधूः। वधूः। वधूः। वधूः। वधूः।
 कानाः। कानाः। कानाः। कानाः। कानाः। कानाः। कानाः। कानाः। कानाः। कानाः। कानाः। कानाः।
 मातः। मातः। मातः। मातः। मातः। मातः। मातः। मातः। मातः। मातः। मातः। मातः।
 मुनिः। मुनिः। मुनिः। मुनिः। मुनिः। मुनिः। मुनिः। मुनिः। मुनिः। मुनिः। मुनिः। मुनिः।
 नृपः। नृपः। नृपः। नृपः। नृपः। नृपः। नृपः। नृपः। नृपः। नृपः। नृपः। नृपः।
 वरः॥ वरः॥ वरः॥ वरः॥ वरः॥ वरः॥ वरः॥ वरः॥ वरः॥ वरः॥ वरः॥ वरः॥

ॐ यथासि योऽस्यो योऽस्यो ॥

सायबानि॥

[illegible][illegible]

सामवेदि॥

[illegible]

२६

जंम २

[illegible]

सिद्धिनि॥

[illegible][illegible]

सायसिनि ॥

[illegible]

यत्रया रुजिमान्कुरुवति ॥ लूकिततन्निमित्तं ॥ पंच। पंच। पंचरिः। पंचरु २ ॥ ॥ पृ३॥ यकावन
कानाकसीखायाः पेनस्यामानुठागमारुवति ॥ नापध्यायांतिदीर्घः ॥ नाप्तातालायः। को ॥ पं
यानी। पंचसू ॥ पंचसूकनेनवनदशानुपहतयः ॥ ॥ अष्टनोवा ॥ अष्टनोवादास्यत्रया रुजि
मावोतिरुवति ॥ उवादितायः अष्टौ। अष्ट १२ ॥ वासू। वाज्रासू। अष्टेन अष्टस्ययमासवि
रुकिषूपनगावा अर्त्तुरुवति ॥ अष्टारिः। अष्टरिः। अष्टारुः। अष्टरुः। २ ॥ अष्टोनी। अष्ट
सू ॥ ॥ मकावाकं दमः। ॥ ॥ दमायैयैसि ॥ ॥ दमः। दस्ययैसिविषय अयंरुवतिमि
॥ अयै। द्वित्वतो दोह त्वदष्टनस्यादोविषयकोनः। ॥ दंडो ॥ तिष्ठित ॥ दस्यमः ॥

॥ नमः ॥

॥ १॥

मानस नि॥

म्यदादीनीदकावस्यमर्त्तुहवतिस्थाद्योयव॥ ॐमो॥ ॐम॥ सर्वदित्वाहोसी॥ म्यदादीनी॥ ध
वराव॥ ॐमी॥ ॐमो॥ ॐमान्॥ ॥ अनेदोसा॥ ॐदमानाद॥ मरुवतिटोसांयवया॥ अन
न॥ सु॥ ॐदम॥ सकावैरुकावचयव॥ अकावैरुवतिटुस्तस्य॥ अर्द्धिगावै॥ अर्द्धी॥ ॥
रिसुसिम् ॥ ॐदमद॥ ॐर्द्धिसिम्भववति॥ नरुकावस्याकव॥ ॥ उरिववृत्त॥ उरि
॥ अस्मि॥ अर्द्धी॥ उर्य॥ अस्मात्॥ अर्द्धी॥ उर्य॥ अस्मि॥ अनया॥ उर्य॥ अस्मि॥ अन
या॥ उर्य॥ ॥ किम्भदस्यम्यदादधुनस्यादविद्यकानेकते॥ सर्वेभदवदुपैनेरी॥ क
॥ को॥ क॥ कीको॥ कान्॥ कन॥ कात्या॥ के विद्यादि॥ ॥ धकावैरुस्तववृत्त॥ द॥ न॥

32

[illegible]

五十五

[illegible][illegible]

सत्यसि ॥३८॥

2

[illegible]

मो न सि नि ॥

उपना । उपनसो । उपनसु ॥ रु उपन ॥ उपनसा ॥ तान तासा कता दकता चता व कवा ॥
 रु उपनन ॥ रु उपन ॥ रु उपनसो ॥ रु उपनसु ॥ ॥ अदमद्यस्य रु द ॥ तयं दधु विनि सर्व
 गुका व ॥ अद ॥ ॥ ति स्मि ॥ सोम ॥ अदसा दका वसो सो यन सखे रुवति ॥ ॥ सोम । अदस
 ॥ सोमो का वा द ॥ रुवति ॥ असी ॥ ॥ दि वचन ॥ अद ॥ ॥ ति स्मि ॥ ॥ दस्यम ॥ मादु ॥ ३५
 उधु उधु ॥ अदसा मका वात्यनस्य रु स्य रु रु उका वा रुवति दी र्द्यस्य वदी र्द्य रुवति
 ॥ अमू ॥ सखी दिवा रुसी ॥ अ ॥ ॥ अम ॥ ॥ ति स्मि ॥ ॥ वी वरु ॥ वरु वचन सग्य दस
 नका व ॥ रुका वा रुवति ॥ अमी । अमी । अमू । अमून ॥ सखे उवच कर्त ॥ दाना सि यी ॥ अ

मना ॥ दिवचन अमी ग्या ली यध्ना मादुका व ॥ अमू र्थी । अमी हि ॥ अमू र्थी । अमू र्थी । अमी र्थ ॥
 अमू र्था ॥ अमू र्थी । अमी र्थ ॥ अमू र्थ ॥ ॥ अमि उव ॥ या दहा वकर्त यध्ना द्दका व ॥ अमू र्था ॥
 ॥ अमी र्थी ॥ अमू र्थिन ॥ अमू र्था ॥ अमी र्थ ॥ सामान्य अदस ॥ कस्या दिव च ॥ अमू क ॥ चकवा
 ॥ अमू र्को । अमू क ॥ र्थी सि मि र्थी च अमू र्को ॥ ॥ ॥ ति रुसा का ॥ र्थी लि ग ॥ ॥ अथ रु
 सा का ॥ र्थी लि ग ॥ ॥ रु रुका वा क उपा न रु रु द ॥ ॥ न रु रु ॥ न रु रुका व स्य ध र्थी ।
 रुवति व स य दान क ॥ वा वसान ॥ द र्थी र्थी च ॥ उपा न द । उपा न रु । उपा न रु । उपा न रु
 ॥ रु उपा न रु ॥ उपा न रु । उपा न रु । उपा न रु ॥ उपा न रु ॥ उपा न रु ॥ उपा न रु ॥ उपा न रु ॥

ॐ ह्रीं ॥ वक्रावाकादिवंशदश ॥ ॥ दिवडो ॥ सो यत्र दिवा वक्रावत्रस्योकावा द ॥ रुवति ॥
 ॥ शो ॥ दिवो ॥ दिवशरुशो ॥ ॥ तामि ॥ दिवशरुशोमियत्रवाज्राकावा द ॥ रुवति ॥ शो ॥
 दिवो ॥ दिवो ॥ दिवश ॥ ॥ पुनस ॥ दिवशरुशोमियत्रवाज्राकावा रुवति ॥ युरी ॥ युरिशदीर्घ
 युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ दिवडुवाक्षिणीति सुवगसु ३१
 वग ॥ मिथीवर्तमानया ॥ मिथुवगशरुशोमि सुवगसु ॥ ॐ ह्रीं ॥ वादलो रुवगशमको
 वगशमको वग ॥ गतसुवाविन्यावनरुवति ॥ तिसुश २ ॥ तिसुरिशति सुवगश २ ॥ व
 तसुश २ ॥ वतसुशिशिवगसुवगश २ ॥ ॥ नतिसुवगसुवगशरुशोमिदीर्घश ॥ कन्दसिगु

वा ॥ तिसुश ॥ तिसुश ॥ वगसुश ॥ वगसुश ॥ तिसुश ॥ वगसुश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥
 युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥
 ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥
 मिग ॥ तिसुश ॥ तिसुश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥
 ककुश ॥ ककुश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥
 वगकावश ॥ सुवगसुश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥
 ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥ ॥ युरुत्तमत्तुमिगश ॥

सो न सती

व ॐ नारादाऽभ रावन ॥ ॥ श्रीमो ॥ युष्मादस्मादाऽयत्रो श्रीमत्तवति ॥ युष्मा ॥ श्री
वी ॥ ॥ यूयमयं दुःसा ॥ जसासदिनया युष्मादस्मादा युयमयं ॐ नारादाऽभ रा
वन ॥ युयमात्रयम् ॥ ॥ त्वमादकत्वा ॥ युष्मादस्मादा मुनादिशेता वादऽभे रा
न ॥ न कत्वेन मयमान ॥ ॥ श्रीमो ॥ युष्मादस्मादा हे रात्वं रावति ॥ श्रीमत्तवति ॥
सिचयरात्वा ॥ माम् ॥ ॥ दादष्टु न त्वं कृ न गसीति दी द्यत्वं ॥ ॥ ॐ नारावकयः

५१

॥ युष्मान् ॥ अस्मान् ॥ ॥ त्वमादादऽभ कृ न त्वकाव ॥ ॥ युष्मादस्मादा दूत्र
त्वं रावति ठादि ॐ नारादाऽभ रावन ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥
॥ अस्मादिः ॥ ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥
वादऽभे रावन ॥ ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥
दाऽभ रावन ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥ युयमात्रयम् ॥

श्री वाणा ॥ ५२

॥ ५ ॥

नदीनं ह्रीनं नौम धूमद नः ॥ २ ॥ देवा वैमना दिव्यं त्रैका नैड ता ईनः स्वामा वीव
 ३ वा नौजा स्वामा नैमिड नौ ईनः ॥ ३ ॥ नैम वीव धूम विहृ स्वा ह्रीन नौ दाय नौ ध
 ३ नी। साने नौ नैः ययै धामः यै धामा नैः सुई शिव नैः ॥ ४ ॥ स्वामा मा। अस्मा सुदि नया यू
 ३ धा दस्मा दा स्वा मा धूम गा वा द (३) रा व नः ॥ य धूम मि स्वा मा दा स्ती रुं य धूम मा म द रा द
 ३ का ॥ ना दौ ॥ वा दा दौ कर्क मा नया यू धा दस्मा दा नै नः आ द धम रा व नि ॥ उडा वि ॥ (३) ॥

५३

यथान ३

अस्मान् ३

१ यथा मि उग न्युद्धे यथा मा ज ग तां चर्ति ॥

त्रा १

वादि न युथा निया नः ३

३ धूम द वा यू धा के कल द व ना। स धूम द रा व नै धा अस्मा के वा य ना न नः ॥ नव
 ३ य धा धा वा ज न्म म न यु मि धा य वः स म्मो धन य दा द (३) न रा व नि व सा द यः ॥ वा दि
 ३ रि धा ॥ वा दि रि व वि या (३) न नै न आ द धम रा व नि ॥ वा दि रि वि या नः ॥ व वा अरु दि न
 ३ वा नै वी नूनी। यथ क वि ना। ना ना स्व मि। अ मि। दा या न की। म्वा। मि धा। मि धा। अ म्वा।
 ३ अ। धा। अ म्वा। स्व म्वा। ड वे म्वा। नी वे म्वा। स्व म्वा। अ न्म म्वा। या न म्वा। य न म्वा। रु य म्वा। अ रु। सि म्वा।

५३

सोमवर्ग १७

उत्तमसुहृन्मृगजुनप्रदा। अकनानमसु। अली। कृती। अमाना नानिध (धा) ष्ण। यन्। कि
 ला। स्वतु। वि। आयात्। रु। र्ण। मृगं। सा। कं। सा। र्द्ध। यन्। नन्। नन्। स्वना ष्ण ष्णैवमादिर्ग
 (ध) निद्यानसंभू। रवति॥ ॥ नगादिर्विरुक्। र्थनिद्यायन॥ ॥ नसिन्निनिगु। य ५५
 सिन्नितियग॥ कुरु। कुरु। का। नसिन्। का। लनदा। यदा। नकदा। अन्यदा। कदा। नः
 नयुका प्रदा गथा यथा। कथा। ष्णै। नस्मादिनिगनः॥ यनः। कनः। अगः। ष्णः॥ सार्वविः

रुकि कुरु सु ष्णैक॥ पूर्वसिन्नितियुं सारु॥ अथन सारु। यनसिन्नितियप्रदाँ दक्षिणदि
 वसन्निवा दमुला ॥ ॥ किमः सारु। विदादि ॥ क। ष्णै ॥ क। सारु। कविन्। कवन्॥
 नदधीन का सारु। या वारु॥ राजा धीनं। राजसारु। रसमसारु॥ ॥ उर्युन र्युगी कन
 र्दा। उनी कुरु॥ उनी कुरु॥ सद्य अदि का लनिया यन॥ सद्य अद्य। सयदि। सु यून
 रुदानी। सद्युनि। सद्युनं। पूर्वद्युः। यनद्युः। अद्युः। ॥ यदि। यर्हि। नर्हि। मर्हि।

आमाना अदिचद्वनयनानि।

म
न
मे
॥

का दिव्य लया न गच्छेत्तु यम वा यमं हं रवति ॥
मूर्त्ति ॥ ॥ यादित्रयसर्गः ॥ ययनाञ्ज यममञ्जु विनिर्गन्तु विनिर्गन्तु विनिर्गन्तु विनिर्गन्तु
निसुडु ॥ अरिपुत्रियवि ॥ उ यञ्जु अञ्जु अवित्रञ्जु यं गण्डैः स ग्नैः सङ्गा रावति ॥ ॥
या ग्मनाः ॥ उ य स ग्म ॥ या ग्मनाः ॥ यथा कथ्या ॥ ॥ नदद्युय ॥ नदिदं वादि गच्छेत्तु यम
द्ययमं हं रवति ॥ ॥ काद्यं गच्छेत्तु कथ्या ॥ ॥ अद्ययादिरकल्लुक् ॥ अद्य ॥ ४५
या लयस्य विरकल्लुक् ॥ वेद्ये नि ॥ अद्यानां नचलितं नदिमये ॥ ॥ उक्तं हि ॥ सह गच्छेत्तु
य ॥

॥ व ॥ लाठिरुला ॥

मूर्त्ति ॥ गच्छेत्तु सर्वसुखं रुकि ॥ वचनं वचनं सर्वसुखं यत्र यत्र नदिद्युयं ॥ ॥ उक्तं ॥
यलिङ्गान् यथादि ॥ यलिङ्गं विनिर्गन्तु विनिर्गन्तु विनिर्गन्तु विनिर्गन्तु यथिय यामु यथया ॥ यमसुखं न ॥ ॥
आगच्छेत्तु यामिद्याया ॥ जाया माया ॥ प्रधा ॥ गच्छेत्तु ॥ माला ॥ धना ॥ ॥ अद्यादि ॥ अद्यादयम्य
वकथ्या ॥ अद्या ॥ गच्छेत्तु का ॥ का किला ॥ किला ॥ गच्छेत्तु गलिका ॥ ॥ काद्यत ॥ कायिष्णु ॥ अगच्छेत्तु
यां कायिष्णु पूर्वस्या कात्रसु कात्राद ॥ अद्य रवति ॥ कायिका ॥ यायिका ॥ याठिका ॥ ॥ वदि रागु

नदी का ३

॥ सा नमो ॥

[illegible]

॥ कत्रिणी। मालिनी। वृषीयिता। स्त्रीयावकः। वाङ्मी। पुनी। मधानी। कर्तु। सुखी। डोपनवी। ॥
 यत्प्रलायशः। वृष्ट्यध्वयः। तस्य लाथा रवतिस्त्रयकात्रचयः॥ ॥ ध्रुवः॥ सकात्रठकात्रडका
 त्रमकात्रानूर्वाध्वमि। यामी प्रत्यथारवति॥ बबनाकी। षट्कुचरी। उर्मिसतीमिरवकी। यव
 नी। गूल्यादि॥ ॥ नदादः॥ नदादग्निलम्भमि। यामी प्रत्यथारवति॥ नदी। जेव्री। जेमसा। च
 तुर्थी। यवमी। यीवत्री। गर्वत्री॥ गूल्यादि॥ ॥ वृद्धादग्निलम्भमि। यामी प्रत्यथारवति॥

४१ वति

५४२
 या रावति॥ नृन्दादा॥ रावना॥ त्रुजदा॥ नावमिति यिहा य॥ वृद्धादा॥ वृष्टीयसमा हात्र गुर
 दा॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ या॥ नव॥ वृष्टी॥ गदाकी॥ वको॥ नृपातिकदीन॥ जागत्रया
 य॥ जागिवाविनायुयका॥ ययधका॥ नाका॥ नृमि॥ यामी॥ युष्टया॥ रावति॥ म॥ म॥ म॥
 रिषा॥ गुरुका॥ रुमा॥ कृ॥ दा॥ वृष्टी॥ दा॥ वृष्टी॥ ययका॥ ययध॥ गुरुका॥ नृमि॥ नृमि॥ नृमि॥
 वया॥ वाविना॥ नृन्दादा॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥
 वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥ वृष्टी॥

[illegible]

मिना

मिना (मना वस्तु क न प्रयादि ॥ कि यम नदि का र्थ ॥ कठ दूत्रा नि का नू का नू य व स्य
 नि वा ॥ दु ख ॥ गं शुं प्रा प्रा नि ध मि षु ॥ सामं सु ना नि साम या ॥ ॥ अ रि सर्व सा ॥
 का र्था वि मुं य र्था दि वृ वि षु ॥ दि ना यां मु ति नां क यु न ना न्य तु वि द द्य न ॥ ॥ अ रि ॥ ॥
 ना गु म न दो वं ति सर्व ना गु म न य वा द द्य न ॥ वि द्य व द ल ॥ उ य यु य वि षु ॥ प्रा दि
 तं या व का ॥ य न कि ॥ अ ध्या (या) गु म नि वि ॥ अ ध्या वि गु म ना र्थ ॥ अ ध्या वि गु म ना र्थ ॥

कि मृ ग ॥ ॥ सम या गु मं न गुरु न ॥ नि क षा गु मं रु लं द्य क ॥ अ नि गु मं य ज्ञान शां का
 ला ध ना र्थे न क र्था वि ॥ मां सम धी न ॥ का र्ण य र्थ न ॥ ॥ क र्क नि यु वा न कि या गु ॥
 य सा ध न व ॥ कि या सि ॥ अ य का र्क क र (॥ र्थ गृ ती र्थ ॥ वि र कि र्थ नि ॥ ॥
 रि न्न ॥ ग न न ना मं द ना व (॥ लो क ना व ल ॥ क ना (॥ ल वि दी (॥ धि वी न रं य ॥
 नं य न ॥ ॥ दान या र्थ य दान को र्क व रु र्थ ॥ व द वि द म न द ना ति ॥ दू या य क ना

लो कान ना व य ना ति ॥

सं स र्ग दी य न (॥ या व द्वा य म् ॥ स य दानं ॥ यथा ॥ द दानि दं यु न्ना म ही व न त्रि ति र क्ता न व दान का म्य या ॥ ग दी स न वा स न या स या
 ये न स य दानं क धि र्क व ल ॥ ॥ ना लो दं द दानि ॥ न ज क म् व रु द दानि ॥ ॥ अ धा दी स य दान क न का रा वा न व रु र्थ ॥ ॥

॥ नमः ॥

यत्पुनरागुपुषासदृशं त्रैलोक्ये मेव हि ॥ सा कत्रयनाली शुक्ला दन्ताशासा द्वन्द्वनिशिर्द्वतः
सा वृषासमवन्दु तमदिनागुपुषा ॥ नमः सुसिखा हासनेन वदु या रज वरुथी ॥ नमो नम
नायक मया ॥ सुसिना क्री ॥ सा मायसाहा ॥ विदुष्य ॥ सुवदा ॥ अलमहो मल्लाय ॥ वष छिन्दाय ॥ ५२
जुनया रजयवमी ॥ मन्त्रज्ञानमू कि ॥ अन्त्या गृहादि हान्ता ॥ निद्वित्रालयवृष्टा ॥ निद्वित्राल
क्रिया गृहाजानि शिष्टमूदायाय ॥ कुत्र लं कुत्र वृष्टा ॥ क्रियाय नात्मी रूवर्षं दाना वकषाद्य

५१

५१

वित कि

५१

वृष्टा गवा कृष्णा ॥ गोमय वन्न क्री ॥ नमः वा क्रु क्रिय ॥ इन्द्र मम ॥ स्वाप्त्या दियारण
षष्टि मयूमा च ॥ गवा स्वामी ॥ गवा मधियनि ॥ (गम पुस्वामि ॥ गम स्वधियनि ॥ ॥ करु
कारुया न को दो कृति वृष्टी ॥ करु कारुय च वृष्टी रावनि ॥ क्रादिवर्जित कृदकृष्ट
युं पुयुष्ट मान ॥ यो मस्य कृति ॥ रात्र नस्य वृष्टी ॥ स्मर गोच कारुय वृष्टी ॥ मृगु ॥ स्मरति ॥
मागरी स्मरति ॥ हनो गता या यचमी च वकृष्टा ॥ अनिरुष्ट ॥ वृष्टा कृम कृष्टना ॥ कृत कृष्टा

५१

ह्रीं सा नमो

अत्र स्यादन्तावसति २।

३१

८१२
 ता शि यरु मे वीम ॥ ओ वा दि रति आ धा दु सति ॥ वि द्यु त्या मा उ कि न धा ॥ य ४
 रु तु पु वा ॥ क स्य रु ता रि य के न्या ॥ ४२ रुं रा व रु ती या ॥ वि ष्यं य ग व य ४
 ति ॥ सी सा त्र म सा त्रं य ४ ध ति ॥ य ना इ वि का य ४ ॥ य ना ॥ ना दि ना वि का ॥ ल डु ४
 १७३ न व वि य ४ ॥ अ नि क रु ४ ध ति ॥ अ य मा न स का य ४ ॥ य का न म य का न म सी ४
 क सें व वें ता त ॥ या जी २ ॥ प व न रु रु ॥

२ ध वि वि ग रुं त्या दृ दृ द व ४ ॥ अ य ग रुं त्या दृ दृ द व ४ ॥ या ॥ अ य दृ द वि म य ४

व ति ॥ या या दान वी च मी ॥ य स्मा ल ४ ४ य ना य ना ॥ ग ल दृ द ४ ॥ अ वा दि रं ग वा ४ ॥ अ वा ठ लि
 पू ना दृ दृ द व ४ ॥ ना द र्थ च रु र्थ ४ ॥ च व क वा ॥ सी य मा य ४ ॥ व रु न रा ध मी य सी य मी ॥ ध मी
 मा दृ य म वा वी ध न दाना य रु क या ॥ ॥ कृ द्या दि द्या ४ ॥ इ रु ४ ॥ अ सु य श्वा द्या दृ दृ द्या
 श्र य वा रि म्भ रि ॥ ल क रु द्या ॥ द य ४ ॥ कृ रा य कृ द्या नि ॥ मि रा य दृ दृ द रि ॥ गु ष र्थ मी ॥ अ सु य मी ॥ ४
 श्र य वी व मा ४ ॥ रु म्भ रि ॥ रु म्भ मा र ४ ॥ रु म्भ रि ४ ॥ अ स ना ४ ॥ रु म्भ रि ४ ॥ नि मि र्ता
 कृ य ला य ४ ॥ २ नि शा य वा द न मा द क ४ ॥
 १ अ स न मा र कृ प रु ता वृ य थ ४ ॥ १

अं (ग वी व मी)

५४ अन्त यथा मर्थसमर्थय निर्णयति ॥ २७ वी वि ४ यद समदाया विगुहा वा क मित्यर्थः ॥
 यी रावणादि हु तल्युत्र यो यत्र यै यधानो ॥ वदु वीदि वन्य यद युधान ॥ दनु कर्मधाय
 यो धारु ययद युधानो ॥ तस्य क्रियारि संव क्षा दूरु ययद युधाना वत्तवान् ॥ ऐक ययमे कस्यय
 मक विरुकि कर्तव्य समास यथा जने ॥ अधि स्त्री ०० ति स्मिन् ॥ श्री गदादि तीर्थे कवचनं जम् ॥ मियम
 धि कृत्य रुवतीति विग्रह ॥ अन्त यथा मर्थयद सम यकि ॥ यद समदाया विगुहा वा क मित्यावत
 ॥ कृत समास अययस्य पूर्वनिपाता वक्य ॥ ॥ पूर्विययययी राव ॥ अयय पूर्वियदस
 निथावय ॥ साययी रावसं कृक ॥ समासा रुवति ॥ ०० ति समास संज्ञायी ॥ ॥ समास पुन्यय

३
 ३
 ३

५४ अन्त यथा मर्थसमर्थय निर्णयति ॥ २७ वी वि ४ यद समदाया विगुहा वा क मित्यर्थः ॥
 यी रावणादि हु तल्युत्र यो यत्र यै यधानो ॥ वदु वीदि वन्य यद युधान ॥ दनु कर्मधाय
 यो धारु ययद युधानो ॥ तस्य क्रियारि संव क्षा दूरु ययद युधाना वत्तवान् ॥ ऐक ययमे कस्यय
 मक विरुकि कर्तव्य समास यथा जने ॥ अधि स्त्री ०० ति स्मिन् ॥ श्री गदादि तीर्थे कवचनं जम् ॥ मियम
 धि कृत्य रुवतीति विग्रह ॥ अन्त यथा मर्थयद सम यकि ॥ यद समदाया विगुहा वा क मित्यावत
 ॥ कृत समास अययस्य पूर्वनिपाता वक्य ॥ ॥ पूर्विययययी राव ॥ अयय पूर्वियदस
 निथावय ॥ साययी रावसं कृक ॥ समासा रुवति ॥ ०० ति समास संज्ञायी ॥ ॥ समास पुन्यय

याशा समास चरुमा नाया विरुक् ॥ ४ ययय चय न लु नूवति ॥ ॥ ०० यमाल
 क् ॥ ना मर्मा मया म्यादि विरु कि ॥ अधि स्त्री सि ०० ति स्मिन् ॥ ॥ स न वी स की ॥ सा
 ययी रावान पर सकलिंग रुवति ॥ नय स क ॥ वादु सत्वं ॥ ॥ अयययी रावादा ॥ अयय
 यी रावादा मय विरु कर् लु नूवति ॥ अधि स्त्री गृहकार्य ॥ रायमं तिका कमति नि
 कृत् ॥ ना विमं तिका कमति नू लं ॥ इत्याद जसं ध कृ रा लम मि कारा का रोव क बो
 ॥ ॥ यथा म्मादा ॥ ॥ यथा म्मादा ॥ यथा म्मादा ॥ यथा म्मादा ॥ यथा म्मादा ॥ यथा म्मादा ॥

अतिका लार्थ द्वितीया रुवतीत्यर्थः ॥ २

५४ अन्त यथा मर्थसमर्थय निर्णयति ॥ २७ वी वि ४ यद समदाया विगुहा वा क मित्यर्थः ॥

अ०

[illegible]

॥३॥

म
न
के
रु

सुभा

नकवडा वावासमाहोत्रवकवाभा^{सुभा} कृष्णभयलाभाभ्यगग कृष्णयलाभ
॥ १ ॥ कृष्णयलाभं ॥ ॥ पुन्यादीनां विरक्तिं लाययुर्वयदस्यसग्नगभा वक
वा^{वः वः} ॥ ॥ यत्रस्यत्र ॥ ॥ एकवद्विगुद्विद्वी ॥ एकवद्वकमानोद्विगुद्विद्वी न
युंसकलिं जितवतथा ॥ संख्यापूर्वादिगुभासंख्यायुर्वसमासादिगुर्विग
इत ॥ ॥ समाहोत्रं जू नंयूद्विगुभासमाहोत्रेद्विगुसमासाहोत्रवनि। न
नाशकाकादीयुस्ययागवनि ॥ ॥ यस्यलायकादसनां गुमाभासमाहोत्रा
गजाग्रीं वागिवाद्यं।

३८

सुभा

दस्यसमी ॥ ॥ यजुसंयुयसमाहोत्रां नित्यं च वि ॥ वीजानां गवांसमाहोत्रं
उगु ॥ नयूसकृत्वा दुस्यत्वा ॥ गिरुसंतिरुदित ॥ ॥ वद्वीरुिनन्याथे ॥
जुन्ययनथेयुधनीयसमाससंवद्वीरुिंसंक ॥ समासाहोत्रवनि ॥ वद्वी
धनंयस्यासोवद्वधनं ॥ यस्मि धनं ॥ यस्ययुधनसोकादसमाविजयवन्न
यायगुल्लयतमनकुलसं विरुतवद्वीरुि ॥ लम्बो कल्लो यस्यलम्बकर्तुया
दुवनकीर्तिर्यस्यसुदनकीर्ति ॥ वद्वीरुि विजयवन्नसकृन्मनयायुर्वनित्ये
नावकवाभाचक्रवाले यस्यसचक्रयालिभा ॥ ॥ यजामधयात्रसूक ॥ सुयजा ॥

५ वी २

सुयजयस

१५ यजामधया ४ गव

या ४ वद्वीरुिं सो जू नंयूद्विगुभासमाहोत्रां

६॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ह्यो (ये) विद्वयमुल्यमिदं कथितं सुतकमस्मीत्युक्तं ॥ सुमस्मीत्युक्तं ॥

३ मातृश्रीय ॥ न०

[illegible]

32

४ वसुन्मदस्य च कावलाया रुवति तद्विहयत्रमह अंभीथोपत्यथोरुवतः।

धनुः गजगर्वाञ्जुः गर्वाञ्जुः ॥ कूमुदस्य गन्धर्वगन्धर्वस्य गन्धर्वस्य कूमुदस्य गन्धर्वस्य ॥ ॥ अथ गन्धर्वः ॥
 गन्धर्वः कात्रावकः ॥ गन्धर्वः कात्रावकः ॥ गन्धर्वः कात्रावकः ॥ ॥ अथ गन्धर्वः ॥
 यामिनाय ॥ गन्धर्वः कात्रावकः ॥ गन्धर्वः कात्रावकः ॥ ॥ अथ गन्धर्वः ॥
 त्रिदं । गन्धर्वः । कूलायहिनी । कूलायहिनी ॥ ॥ अथ गन्धर्वः ॥
 गन्धर्वः ॥ अथ गन्धर्वः ॥ अथ गन्धर्वः ॥ ॥ अथ गन्धर्वः ॥
 दध्वागन्धर्वः ॥ अथ गन्धर्वः ॥ अथ गन्धर्वः ॥ ॥ अथ गन्धर्वः ॥
 यम् । कूलायहिनी । कूलायहिनी ॥ ॥ अथ गन्धर्वः ॥
 प्रयम् । ध्रुवः ॥ ॥ अथ गन्धर्वः ॥ ॥ अथ गन्धर्वः ॥
 ४ अथ गन्धर्वः ॥ अथ गन्धर्वः ॥ अथ गन्धर्वः ॥ ॥ अथ गन्धर्वः ॥

२५५३

६५
साधनी

673

सादप्रनी॥

[illegible][illegible]

शक्रः सर्वद्वयार्थः ॥१॥

मद्रुहदस्यष्टराखरवतिवाष्ट्रुहृष्टादष्टमरवति॥ न तावा नू॥
यानू॥ गुलुदत्रिल॥ मुददनिनात्यत्रस्य॥ लपयथा रवतिअम्यः
(थ॥ गुलुल॥ उदलिल॥ ॥ अत्रय ॥ दकइत्र॥ दकुत्र॥ ॥
दकिल॥ दकाल॥ कयाल॥ अममाराभ॥ अमु॥ अम्य॥ (थविनवकाव
॥ अयसी॥ मायावी॥ भक्षवी॥ मुर्वी॥ ॥ वं॥ मिनि॥ वाग्मी॥ ॥ अलटिकुम्भि
मराविलि॥ वाचाल॥ वाया॥ उ॥ विवीषदयत्रिसमाप्ति॥ कल्याद॥ द॥ द॥ नीया॥
दयाल॥ २२ स्तोत्राद्यान्वर्थं याज्ञाप्रकाशकका

नया भाषा सु व सि । २

वीषदपत्रिसमायुक्तं सर्वरूपं सर्वरूपकल्य ॥ यदुदयं यदुदयं यदुदयं ॥ कवि
 दहय ॥ कविदहय ॥ ॥ यथा सायात्रय ॥ यथा सायात्रय ॥ यथा सायात्रय ॥ ॥
 कत्रलत्रय ॥ यथा ॥ कुसुमाय ॥ कुसुमाय ॥ कुसुमाय ॥ ॥
 लक्षणयुक्तं यदुदयं यदुदयं यदुदयं ॥ ॥ यथा यथा विकारयाधन्यादि
 यमराय ॥ यमराय ॥ यमराय ॥ ॥ यमराय ॥ यमराय ॥ यमराय ॥ ॥
 ॥ यमराय ॥ यमराय ॥ यमराय ॥ ॥ यमराय ॥ यमराय ॥ यमराय ॥ ॥
 यमराय ॥ यमराय ॥ यमराय ॥ ॥ यमराय ॥ यमराय ॥ यमराय ॥ ॥

१५५

和

संघिद्यो गथाः संघिड्यार्थ कावठकात्रयाः संवन्धितस्वरसुवृद्धिर्नरावतिपर्व
गुयूयागमनवत्तवति॥ॐ ह्रूं ह्रूं ह्रूं नारावाभोरवतशावलूविह्वल्यकृत्यायक
त्राल्यूर्ध्वप्रिकात्रावकार्त्यूर्ध्वमुकाशान्तरायञ्जदादिस्त्रस्यक्तिगिरिवृद्धिः॥
ॐ नाजातार्थलङ्किगतयेयितशान्नरनभयसिद्धाय कर्म॥ यकर्मअग्निभा
यर्थननरम० यमू० ह्रूं ह्रूं नारावाभोरवति॥ अग्निहायनकृष्ण॥ कृष्णनर
॥ शुक्रनमः॥ ॐ यस्मिच्छातिगाविनिवक्तव्यो॥ तिलादिलोपः॥ उक्तात्रानूमिधनार्थः
॥ नमस्तुभ्यो दीर्घः॥ अग्निहायनलघुर्लघीयात्॥ पायीयान्॥ लेखी
लङ्का जागा ६ स्थ निलङ्किगः॥ ४
शुक्रान्तर १ वृष्टिगः

पु य य ष्का न ४ स य का न स हि
 गो व क वा ४ ०० न थः ॥
 य सी । या पी य सी ॥ ल धि ष ॥ या पी ष ॥ गु र्वा द त्रि ष म नी य स म न
 दि ष ला य ष ॥ अ ति ष य न नु र्वा नी या न । न त्रि ष ॥ गु र्वा र्वा वा न त्रि मा
 वि मा । य ष ॥ गु र्वा न ॥ सु वि ष ॥ सु वी य न ॥ ०० ला य ॥ अ ष दा दी य सु ००
 का या न ॥ ०० ०० ०० अ ति ष य न दी दी दा दी या न । दा धि ष ॥ अ ति ष य न य ष ॥
 या य सी ॥ अ य य ष का न स य का न स हि गो व क वा ४ ०० न थः ॥
 ०० या न ॥ ०० ०० ॥ वे द । त्रि ष यि ॥ अ ति ष य न वे द ॥ ख यि ष ॥ ल या न ॥
 कि मा र्वा या दा र्वा ता च त न म नै या ना म क वा ॥
 र्वा ल या दी र्वा य था क म य ष दा य ल या ०० न अ द ष ॥ ०० ला य ष अ ति ष
 न थ नि २

11813

श्रीगणेशाय नमः

三

क्रा३

वि. क. ६. गु. न. पृ. वि. ३. क. ३. त. म. २.

[illegible]

॥ श्री गी ॥ ३ ॥

[illegible]

道

[illegible]

2269 I